वैश्विक जीवन-मूल्य और रामकथा

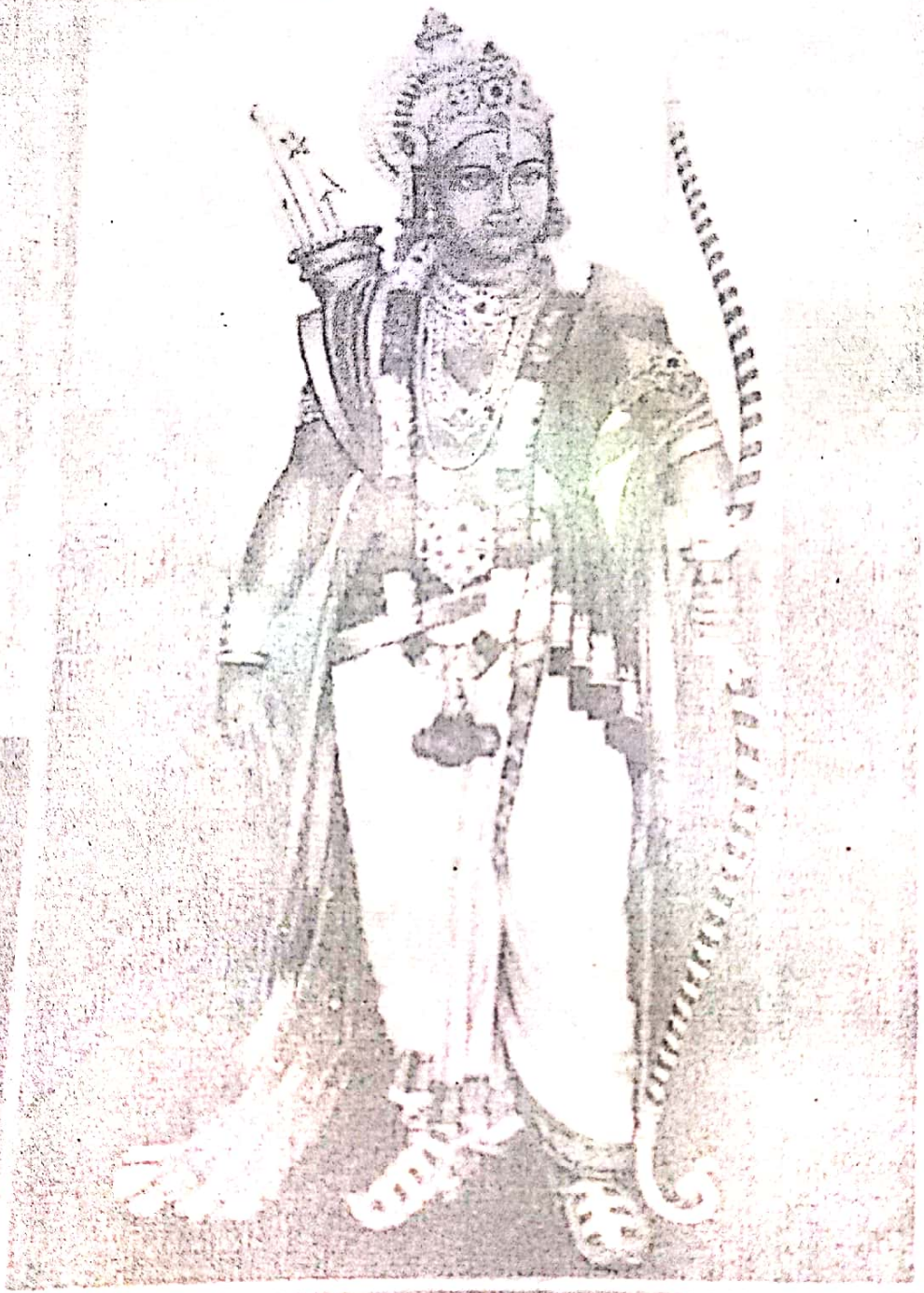

सम्पादक

डॉ. घनश्याम भारती

Scanned with CamScanner

जे.टी.एस. पब्लिकेशन्स, दिल्ली
इन्टरनेशनल कॉन्फ्रेंस प्रोसीडिंग पीयर-रिव्यूड, रिफर्ड बुक
(पूर्व-समीक्षित, सान्दर्भिक पुस्तक)
हिन्दी-विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा सागर मध्यप्रदेश
पीयर रिव्यू टीम
डॉ. श्रीराम परिहार, पूर्व प्राचार्य, खण्डवा, मध्यप्रदेश
डॉ. सुरेन्द्र बिहारी गोस्वामी निदेशक, मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, भोपाल
डॉ० सुरेश आचार्य, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी-विभाग, डॉ० हरीसिंह गौर वि.वि., सागर
डॉ० पृथ्वीनाथ पाण्डेय, भाषाविद्-समीक्षक-मीडिया अध्ययन-विशेषज्ञ, इलाहाबाद
डॉ० नीलम जैन, विजिटिंग स्कॉलर, सेंट जोन्स स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
डॉ० सरोज गुप्ता, अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, शासकीय कला/वाणिज्य महाविद्यालय, सागर

वैधानिक चेतावनी
पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन- फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक/ संपादक/ प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित शोध-पत्रों में निहित विचार तथा संदर्भों का संपूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। संपादक/ प्रकाशक इसके लिए उत्तरदायी नहीं है।

© सर्वाधिकार सुरक्षित
प्रथम संस्करण : २०१८
ISBN 978-93-87580-30-5
प्रकाशक
जे०टी०एस० पब्लिकेशन्स
वी-५०८, गली नं०१७, विजय पार्क, दिल्ली-११००५३
दूरभाष : ०८५२७ ४६०२१२, ०११-२२६११२२३
E-Mail : jtspublications@gmail.com
मूल्य : ८७५.०० रुपये
ले-आउट डिजाइन: कविता मो.- ६२८६३६३२७८
आवरण : प्रतिमा शर्मा, दिल्ली
मुद्रक : तरुण ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली
VAISHVIK JIVAN-MULYA AUR RAMKATHA
Edited by Dr. Ghanshyam Bharti

वैश्विक जीवन-मूल्य और रामकथा

अन्तरराष्ट्रीय शोध संगोष्ठी का कार्यवृत्त

परामर्श एवं मार्गदर्शक
डॉ.श्रीराम परिहार, डी.लिट्.
पूर्व प्राचार्य, खण्डवा, मध्यप्रदेश

डॉ.पृथ्वीनाथ पाण्डेय
भाषाविद् एवं मीडिया अध्ययन विशेषज्ञ, इलाहाबाद, उत्तरप्रदेश

सम्पादक मण्डल
डॉ.सुरेश आचार्य
प्रोफेसर एवं पूर्व अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, डॉ.हरीसिंह गौर वि.वि., सागर
डॉ.सरोज गुप्ता
अध्यक्ष,हिन्दी विभाग, शासकीय कला/वाणिज्य महाविद्यालय, सागर
डॉ.नीलम जैन
विजिटिंग स्कॉलर, सेंट जोन्स स्टेट यूनिवर्सिटी, अमेरिका
डॉ.ए.के.जैन
प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा
डॉ.ए.के.सिन्हा
एसो. प्रोफेसर, अर्थशास्त्र विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा
श्रीमती ज्योमी पद्मा कुमार
असि. प्रोफेसर, अंग्रेजी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा
डॉ.सुनील विश्वकर्मा
असि. प्रोफेसर, भूगोल विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा
डॉ.मंगलसिंह
हिन्दी विभाग, शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय,गढ़ाकोटा

Self Attested

Scanned with CamScanner

२२. रामचरित मानस में मानवीय दृष्टिबोध — १२६
डॉ. अंशुला मिश्रा

२३. तुलसी कृत रामचरितमानस में जीवन-मूल्यों की शिक्षा — १३४
डॉ. अनसूया अग्रवाल, डी. लिट्.

२४. कवि नरेश मेहता के खण्डकाव्य 'संशय की एक रात' में कथा परिवेश — १३८
आशाराम साहू

२५. रामकथा के जीवन-मूल्य और गुरु गोविंदसिंह कृत 'रामावतार' — १४५
डॉ. अनिल कुमार

२६. दक्षिण पूर्व एशिया में रामायण संस्कृति — १५७
डॉ. जितेन्द्र प्रताप सिंह

२७. रामायण आधारित 'प्रतिमा' नाटक में जीवन-मूल्य — १६५
डॉ. पंकज मरमट

२८. 'पंचवटी प्रसंग' गीति-नाट्य में राम के मूल्य — १७१
डॉ. प्रज्ञा पाण्डेय

२९. निराला और राम की शक्ति पूजा — १७६
डॉ. रितु सरमंडल

३०. रामभक्त शिरोमणि एवं रामचरितमानस के प्रमुख पात्र- श्री हनुमानजी — १७९
डॉ. विजय बहादुर चौबे

३१. तुलसीदास की रचनाधर्मिता में मानवीय मूल्य और धर्म — १८६
अवधेश कुमार

३२. मिथिलेश्वर की कहानियों में लोकसांस्कृतिक जीवन-मूल्य — १९५
गीतलाल

३३. भारतीय समाज और राम का चरित्र — २०१
लखन यादव

३४. बुन्देली उपन्यास 'जयराष्ट्र' में रामकथा — २०८
सोकेश कुमार

३५. रामचरित मानस मे ज्योतिष शास्त्र — २१२
श्रीमती ममता दुबे

Scanned with CamScanner

बुन्देली उपन्यास 'जयराष्ट्र' में रामकथा

लोकेश कुमार
शोधार्थी, हिन्दी-विभाग,
शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बैतूल (म.प्र.)

डॉ. रामनारायण शर्मा का यह एक बुंदेली उपन्यास है। इस उपन्यास में राम-राजतिलक के अवसर पर महाराज दशरथ से वरदान मांगने से लेकर वनवास से लौटने और राजतिलक तक की कथा औपन्यासिक रूप में वर्णित है। इस उपन्यास की प्रमुख विशेषता इसके बुन्देली के लालित्य की है। यह उपन्यास वरदान, विधान, प्रस्थान, संधान, संग्राम और समाधान नामक छः अध्यायों में विभक्त है। अध्यायों का नामकरण कथा-प्रसंगानुसार किया गया हैं। हालाँकि राम-कथा चिर परिचित और जग प्रचलित है फिर भी डॉ. शर्मा ने अनेक मौलिक उद्भावनाओं और बुंदेली भाषा और संस्कृति के सुरभित चंदन से कथानक को आकर्षक और रोचक बनाने का प्रयास किया हैं। आवश्यकता पड़ने पर कथानक में थोड़े बहुत परिवर्तन भी किये गये हैं। एक अंश दृष्टव्य है-

राजा दशरथ - गुरूदेव का आशीर्वाद ले कर आश्रम से प्रस्थान कर गये।

वशिष्ट आश्रम से लौट राजा दशरथ सीधे महल में पौचे। कौशल्या कैकई और सुमित्रा को गुरूदेव के आशीर्वाद की बात बताई। पुत्र कामना जग्य की बात सुन रानियाँ अति प्रसन्न भई। सूने महलन में खुशी की लहर दौड़ गई। दास-दसियन ने महल के बाहर समाचार पौचाये। पूरी अयोध्या उल्लास से भर गई नगर के नर - नारी एक दूजे से समाचार बाँट रघुकुल के उदय की आस में दिन बितान लगे। समाचार दूर गणराजों तक फैले गयो। सभी ने अयोध्या की कामना पुरी होवे की ईश्वर सें वरदान माँगे। इधर महाराज दशरथ के प्रस्थान के बाद गुरू वशिष्ट ने अपने दो शिश्यों को पत्र देकें सिंगीरिशी सें दशरथ की पुत्र कामना हेतु यज्ञ करावे की बात लिख भेजी। यज्ञ पुरूषोत्तम पास में देवाधिदेव महादेव की कृपा सें पूरन करावे काजें अपुन आचार्य पद सम्भारें कायसें अपुन कुल में मान्य और शिशि श्रेष्ठ हैं।

उपन्यास की कथा वस्तु रामचरितमानस के आधार पर निर्मित हुई है। उपन्यास के द्वितीय अध्याय का नाम विधान है। इसमें ऋषियों के यज्ञों की रक्षा,

Scanned with CamScanner

अपहरण करके लंकापुरी उठा ले जाता है। उपन्यासकार ने इस दुखपूर्ण घटना का डूब कर चित्रण किया है। चित्रण के प्रमुख अंश दृष्टव्य है -

श्रीराम ने धनुष पै बाण रख प्रत्यंचा खींच ती छोड़ दयो। बाण लगतई मायावी मारीच धरती पै गिर गयो। अंत में लक्ष्मन! हे सीते की पुकार लगा के पंचवटी को गुंजायमान कर परलोक सिधारो। इते है लक्ष्मन ! हे सीते ! की करुण पुकार सीता कौ मन डोल गयो। सीता ने प्रीयम को विपदा में फँसो जान सहायक की पुकार मान लछमन सें कई भैया लक्ष्मण ! श्रीराम विपत्ति में है। तुमें पुकार रये। तुम शीघ्र जाओ।" इस सारे कथानक का उल्लेख वाल्मीकि रामायण और रामचरित मानस में किया गया हैं। डॉ. शर्मा ने थोड़े आवश्यक परिवर्तन करते हुए उपन्यास में स्थान दिया है।

पाँचवे आध्याय का नाम 'संग्राम' हैं। सीता अपहरण के बाद संग्राम का क्रम आता हैं। जिससे लंका काण्ड की स्थिति निर्मित होती हैं। हनुमान ने लंका दहन करके राक्षसों को भयभीत कर दिया था। लंका की खोज करके राम ने वानर रीछों की सेना लेकर लंका पर चढ़ाई कर दी थी। भंयकर महा संग्राम हुआ। अनेक राक्षसो का संहार हो गया। लक्ष्मण को शक्ति लगी हनुमान ने संजीवनी बूटी लाकर लक्ष्मण के प्राण बचाये। मेघनाथ और कुम्भकरण का वध हो गया। अंत में राम रावण का युद्ध हुआ। उपन्यास का अंश देखिये-

क्रोध से भरे रावण नें अन्धाधुंध अस्त्र-शस्त्र की बरसा शुरू कर दई। श्रीराम नें जिले पलभर में नष्ट कर दयो। चिंतित रावण ने दस शूल छोड़े। जिने श्रीराम ने काट डारे। सारथी पै गुस्साए रावण ने अथार हो उये ताल मार रथ संचालन को गति देवे की कई। क्रोध्द से बुध्दि नष्ट हो जात रावण की जई दशा भई। तुवई श्रीराम से कइयक बान छोड़ रावण के सिर में मूकुट और रथ की पताका काट रथ नष्ट करकें रावण को नीचे गिरा दयो। श्रीहीन रावण धरती से उठ विकराल रूप दिखा युध्द करन लगो। श्रीराम नें बानन सें उनकी भुजायें कार डारी। फिर भी वह अधमरों कों सिर अपने बान से काट डारो। रावण के अंत से जै श्रीराम की विजय भई। सब नें जै श्रीराम की जै जै कार करी। तब श्रीराम बोले -

श्रीराम - युध्द की विजय प्रजा की विजय है। गणराज्यों के उदय और विश्वास की जै है। रघुकुल के प्रण की विजय हैं। एक राष्ट्र की विजय गाथा है। जै भारत राष्ट्र। सभी एक स्वर - जै श्रीराम ! जै राष्ट्र !"

षष्ठम अध्याय 'समाधान' में लंका विजय और सीता का उध्दार करके अयोध्या लौटने का वर्णन हैं। यहीं आकर सब समाधान हो जाता है और चौदह वर्ष के पश्चात् राम अयोध्या राज्य में वापस आते हैं। जिसकी सूचना भरत महल

में आकर तीनों माताओं [illegible] सब अच्छा हुआ और महल में श्रीराम के स्वागत व आरती की तैयारी होने लगी। अयोध्या नगरी में श्रीराम के आगमन से खुशी की लहर फैल गई। पूरे राज्य को फूलो व दीपों से सजा दिया गया। गुरूदेव वशिष्ट ने प्रभु श्रीराम के स्वागत का आदेश दिया। श्रीराम ने अयोध्या पहुँच राज कार्य संभाला और राम राज्य की स्थापना की उन्होने जय - राष्ट्र की स्थापना की थी।

प्रस्तुत उपन्यास से भारतीय संस्कृति व धर्म की पहचान हैं। गद्य रूप में होने से उपन्यास के भाव सरल व सुलभ ही समझ आ जाते हैं। लोक जीवन से जुड़ी बुंदेली में होने से उपन्यास सुसज्जित हो गया हैं।

संदर्भ सूची -

१ जय-राष्ट्र - डॉ.रामनारायण शर्मा

२ अक्षत चंदन (अभिनंदन ग्रंथ) - डॉ.रामनारायण शर्मा

३ रामचरितमानस - तुलसीदास

***